मई 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

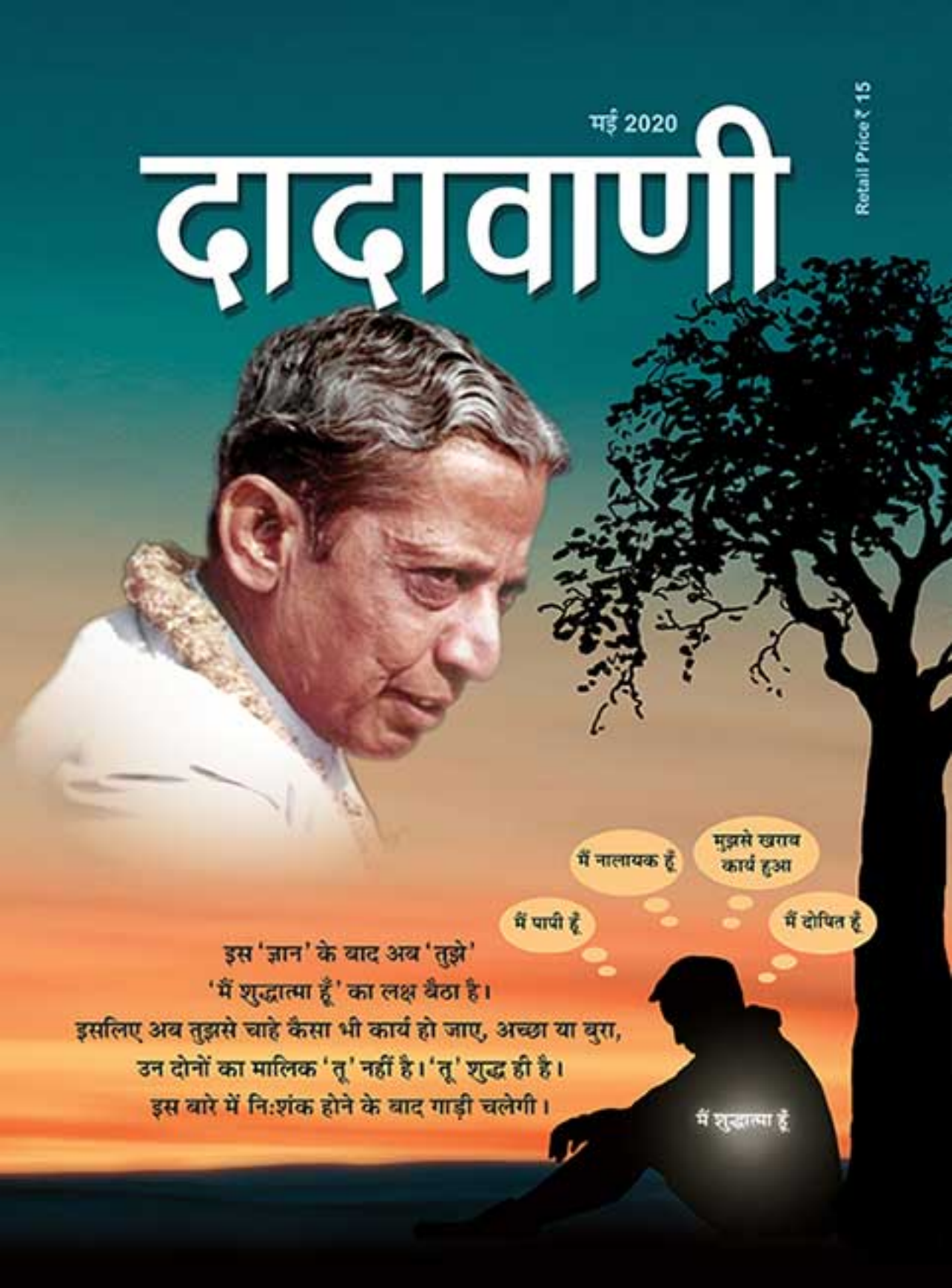

इस 'ज्ञान' के बाद अब 'तुझे'
'मैं शुद्धात्मा हूँ' का लक्ष बैठा है।
इसलिए अब तुझसे चाहे कैसा भी कार्य हो जाए, अच्छा या बुरा,
उन दोनों का मालिक 'तू' नहीं है। 'तू' शुद्ध ही है।
इस बारे में निःशंक होने के बाद गाड़ी चलेगी।

कोरोना वायरस महामारी की वजह से हुए लोकडाउन के समय में वीडियो कोन्फरेन्सिंग द्वारा वात्सल्य (सीमंधर सीटी) से पूज्यश्री का सत्संग

वेस्टर्न्स

मेडिकल फील्ड

GNC

हिन्दी भाषी

अविवाहित युवा

गुजराती

वर्ष : 15 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 175
मई 2020
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421
संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500
सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल

भारत	: 1500 रुपये
यू.एस.ए.	: 150 डॉलर
यू.के.	: 120 पाउन्ड

वार्षिक

भारत	: 150 रुपये
यू.एस.ए.	: 15 डॉलर
यू.के.	: 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'शुद्धात्मा' शब्द की वैज्ञानिक समझ

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते थे कि जो ज्ञान नेमिनाथ भगवान ने गजसुकुमार को दिया था। वही ज्ञान हमें भी है, खुद के मूल स्वरूप का ज्ञान। तीर्थंकरों के पास जो आत्मा था, वही आत्मा इस काल में हमें प्राप्त हुआ है, वही सब से बड़ा आश्चर्य है! ज्ञानविधि के बाद देह और आत्मा अलग-अलग हैं, ऐसा अनुभव होता है। फिर वे कभी भी एक हो ही नहीं सकते! जैसे कि दही बिलोकर, मक्खन और छाछ को अलग कर देने के बाद वे दोनों किसी भी तरह से एक हो ही नहीं सकते, वैसा यह विज्ञान है। मूल विज्ञान तो तीर्थंकरों का है लेकिन दादाश्री ने 'अक्रम' प्रकार से यह विज्ञान जगत् को दिया है।

पहले खुद पुद्‌गल के आधार पर भटक रहा था, इसलिए अनाथ था। अब, ज्ञान मिलने के बाद खुद को आत्मा का आधार मिला, इसलिए खुद सनाथ हुआ। आत्मा, वह एक ऐसा परम तत्त्व है कि जिसमें अनंत शक्तियाँ हैं। सिर्फ, उसमें ही चेतनता, ज्ञान व सुख है और वह हम खुद ही है। ज्ञानी की कृपा से हमें उसकी पहचान हो गई है।

अध्यात्म जगत् में सभी जगह आत्मा को पहचानने को ही कहते हैं। अत: प्रश्न यह ऊठता है कि दादा ने 'शुद्धात्मा' क्यों कहा, 'आत्मा' ही क्यों नहीं कहा? दादा ने 'शुद्धात्मा' कहा, उसके पीछे कारण यह है कि आत्मा तो कभी भी अशुद्ध हुआ ही नहीं। अब चंदूभाई से कोई भी खराब काम हो जाए फिर भी 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह *लक्ष* (जागृति) भूलना नहीं चाहिए। 'मैं चंदूभाई हूँ' करके जितना उल्टे चले उतना ही 'मैं शुद्धात्मा हूँ' करके वापस लौटना है।

'शुद्धात्मा शब्द' की विशेष स्पष्टता करते हुए दादाश्री कहते हैं कि शुद्धात्मा ही सच्चिदानंद स्वरूप है। प्रस्तुत अंक में दादाश्री 'शुद्धात्मा' शब्द को वैज्ञानिक रूप से समझाते हैं। जिसमें शुद्धात्मा शब्द का मर्म, दिव्यचक्षु से शुद्धात्मा का भान, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलने के पीछे का मर्म, शुद्ध चित्त ही शुद्धात्मा है, शुद्धात्मा का ध्यान, रटन, स्मरण, ध्यान के खुलासे, स्वशुद्धि के लिए शुद्धात्मा की दृष्टि, रियल व रिलेटिव की भेद रेखा वगैरह बातों का यहाँ पर संकलन हुआ है।

ज्ञान मिलने के बाद 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की जागृति रहती है, उसके साथ ही सभी में शुद्धात्मा है, ऐसी समझ फिट हो जाती है। तभी से परमात्मा पद की श्रेणी की शुरुआत हो जाती है।

अब महात्माओं को इतना मज़बूत हो जाना है कि कर्म के उदय चाहे कितने भी ज़बरदस्त आएँ फिर भी खुद की शुद्धात्मा की गुफा में बैठे-बैठे देखते रहें, बाहर निकलें ही नहीं। हमेशा के लिए इतने मज़बूत हो जाएँ कि प्रत्येक संयोग शुद्धात्मा का अनुभव न भूलें। उसके लिए 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की वैज्ञानिक समझ को मज़बूत करके महात्मा स्टेप बाय स्टेप आगे बढ़ते हुए परमात्मा पद के अनुभव की श्रेणी में आगे बढ़ सकें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

'शुद्धात्मा' शब्द की वैज्ञानिक समझ

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'आत्मा', स्वरूप ही ग़ज़ब का

दादाश्री : इस दुनिया में जानने जैसा क्या है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : स्व-स्वरूप।

दादाश्री : बस! उसके अलावा दुनिया में जानने जैसी अन्य कोई चीज़ है ही नहीं। सिर्फ स्व-स्वरूप ही जानने जैसा है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन वह अद्‌भुत दर्शन क्या होगा?

दादाश्री : जो जगत् से पूर्ण रूप से गुप्त है, गुप्त स्वरूप है। पूरा जगत् ही जिसे नहीं जानता, वह गुप्त स्वरूप, वह अद्‌भुत ही है। उससे अधिक अद्‌भुत वस्तु इस दुनिया में अन्य कोई है ही नहीं। और अद्‌भुत तो इस दुनिया में कोई वस्तु है ही नहीं न। सभी चीज़ें मिल सकती हैं, लेकिन जो गुप्त स्वरूप है न, सिर्फ वही अद्‌भुत है, इस दुनिया में! अतः शास्त्रकारों ने इसे अद्‌भुत, अद्‌भुत, अद्‌भुत कहकर लाखों बार अद्‌भुत कहा है। आत्मा जानने से जाना जा सके, ऐसा नहीं है। आत्मा तो इस पूरे वर्ल्ड की गुह्यतम् वस्तु है।

''जेणे आत्मा जाण्यो तेणे सर्व जाण्यु।''

- श्रीमद् राजचंद्र।

जगत् के तमाम शास्त्र सिर्फआत्मा को जानने के लिए ही लिखे गए हैं। दुनिया में जानने जैसी कोई चीज़ हो तो वह आत्मा ही है। जानने वाले को जानो। इन्द्र, महेन्द्र तक का भोगकर आने के बावजूद अनंत जन्मों की भटकन रुकी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा का स्वरूप है?

दादाश्री : जो भी वस्तु के रूप में है, उसका स्वरूप होता ही है। आत्मा भी वस्तु है और उसका भी स्वरूप है। उसका तो ग़ज़ब का स्वरूप है। और वही जानना है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र जिसका स्वरूप है, और परमानंद जिसका स्वभाव है, उसे जानना है।

'आत्मा', शब्द से समझा जा सके वैसा नहीं है, संज्ञा से समझा जा सकता है। 'ज्ञानी पुरुष' आपका आत्मा संज्ञा से जागृत कर देते हैं। जैसे कि यदि दो गूंगे लोग हों, तो उनकी भाषा अलग ही होती है, एक ऐसे हाथ करता है और दूसरा ऐसे हाथ करता है, तो दोनों स्टेशन पर पहुँच जाते हैं! वे दोनों अपनी संज्ञा से समझ जाते हैं। हमें उसमें पता नहीं चल सकता। उसी तरह 'ज्ञानी' की संज्ञा को ज्ञानी ही समझ सकते हैं। वह तो जब 'ज्ञानी' कृपा बरसाएँ और संज्ञा से समझाएँ, तभी आपका आत्मा जागृत हो सकता है। आत्मा शब्द-स्वरूप नहीं है, स्वभाव-स्वरूप है।

ज्ञान-दर्शन शुद्ध हुआ, वह सच्चिदानंद

प्रश्नकर्ता : आत्मा को 'सच्चिदानंद' क्यों कहा गया है?

दादाश्री : आत्मा क्या है? आत्मा शब्द, वह संज्ञा है आत्मा अर्थात् सेल्फ (खुद)। सेल्फ को 'सच्चिदानंद' कहा गया है। अभी जो सेल्फ है, 'मैं चंदूभाई हूँ', यह सेल्फ देहाध्यास है जबकि वह सेल्फ सच्चिदानंद है।

प्रश्नकर्ता : 'सच्चिदानंद' शब्द का अर्थ क्या है?

दादाश्री : सच्चिदानंद, वही खुद का स्वरूप है। जो शुद्धात्मा है, वह सत्-चित्त-आनंद है। अभी असत् चित्त हो चुका है। असत्, अर्थात् चित्त अशुद्ध हो चुका है। चित्त अर्थात् ज्ञान-दर्शन। अत: ज्ञान-दर्शन अशुद्ध हो चुके हैं। वह ज्ञान-दर्शन ही शुद्ध हो जाए तो वह है सच्चिदानंद।

प्रश्नकर्ता : और सत् शब्द ही है?

दादाश्री : सत् शब्द अर्थात् अविनाशी। इस संसार का सत्य नहीं। इस संसार का सत्य तो विनाशी सत्य है। इस संसार का जो माना हुआ सत्य है वह विनाशी सत्य है। जबकि मूल सत् अविनाशी है, सनातन है।

प्यॉर (शुद्ध) ज्ञान, प्यॉर दर्शन और सनातन, उसी का फल आनंद है। अभी विनाशी ज्ञान-दर्शन है कि, 'यह मेरा घर है और यह सबकुछ मैंने समझा है।' यह सारा ज्ञान विनाशी है जबकि अविनाशी तो खुद का स्वरूप है। उसे समझने के बाद अविनाशी ज्ञान उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, तो उसमें आनंद कहाँ से आया? सत्-चित्त-आनंद में?

दादाश्री : आत्मा खुद स्वभाव से ही सनातन है, परमानंद है। यह परमानंद का मालिक है, खुद ही आनंद का धाम है। दुनिया में इस आनंद जैसी और कोई चीज़ है ही नहीं। खुद आरोपित भाव में है। यदि आप जलेबी में आरोपण करते हो तो आपको जलेबी में सुख महसूस होता है और यदि जलेबी पसंद न हो तो उससे सुख नहीं होता। बाकी, जलेबी में सुख है वह बात ही गलत है। लोगों की वे बातें कि रुपये में सुख है या सोने में सुख है, वे भी गलत हैं। क्योंकि कई लोग ऐसे होते हैं जो कि सोना भी नहीं लेते। नहीं होते ऐसे? यदि अभी कोई मुझे कुछ दे तो मैं स्वीकार नहीं करूँगा। सोना दे या चाहे कितनी भी चांदी दे, वे मेरे काम के नहीं हैं न! मैं तो अपार सुख में रहता हूँ तो फिर इन सभी टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट का मुझे क्या करना है!

जब आत्मा देह छोड़कर मोक्ष में जाता है तब उसका स्वरूप सच्चिदानंद होता है। उसका प्रकाश पूरे ब्रह्मांड में फैल जाता है। उसके बाद वह सिद्धक्षेत्र में जाता है और सिद्ध बन जाता है।

जय सच्चिदानंद में तो पूरे वर्ल्ड का एक्स्ट्रैक्ट (सार) भरा हुआ है। सभी शुद्धात्माओं का जो एक मात्र स्वभाव है, वह है सच्चिदानंद। जो चौबीस तीर्थंकरों का इकट्ठा स्वरूप है, वह है सच्चिदानंद। तीर्थंकरों के नाम तो उनके शरीर के नाम से रखे गए हैं। उन चौबीस तीर्थंकरों को यदि एक साथ पुकारना हो तो वह है 'सच्चिदानंद'। सच्चिदानंद तो उनका स्वरूप है। यदि 'सच्चिदानंद' बोलोगे तो चौबीस तीर्थंकरों को पहुँच जाएगा। अत: यदि सच्चिदानंद बोलोगे तब भी कल्याण हो जाएगा।

फिर भी प्रकृति की ज़ंजीर में कैद

प्रश्नकर्ता : यदि आत्मा सच्चिदानंद है तो क्या फिर वह खुद स्वतंत्र और मुक्त है?

दादाश्री : नहीं, सच्चिदानंद स्वरूप है लेकिन स्वतंत्र नहीं है। इसीलिए तो यह दशा हुई है।

यदि स्वतंत्र होता तब तो अभी ही मुक्ति मिल जाती न! देर ही क्या लगती? यह तो ऐसा बंधा हुआ है कि... यदि वह लोहे की मज़बूत ज़ंजीर से बंधा होता न, तो हम 'गैस कटिंग' करके उसे काट देते। लेकिन यह तो इस तरह से बंधा हुआ है कि टूट ही नहीं सकता। वह ज़ंजीर भी कैसी? कवि ने क्या लिखा है? *'अधातु सांकळी ए बंदीवान।'* अधातु ज़ंजीर से अर्थात् इस प्रकृति की ज़ंजीर से बंधा हुआ है। 'आत्मा को बंधन नहीं है', वह बात तो सौ प्रतिशत सच है लेकिन वह किसकी अपेक्षा से है? यह तो निरपेक्ष बात है। ज्ञान भाव से आत्मा को बंधन नहीं है, अज्ञान भाव से बंधन है। यदि आपको ज्ञान भाव आ गया कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो 'आपको' बंधन नहीं है। और जब तक 'मैं ही चंदूभाई हूँ', ऐसा भाव है तब तक बंधन ही है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहते हैं कि आत्मा सच्चिदानंद घन है, यह कल्पना है या सच है?

दादाश्री : सच है। आत्मा सच्चिदानंद घन है। यह बात सच है, इसमें कल्पना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दूसरे लोग उसे कल्पना कहते हैं, वह?

दादाश्री : कल्पना करने वाले को तो अभी तक भान ही नहीं है, कि यह सच्चिदानंद क्या है, यदि भान होता न, तो खुद का निरंतर, शाश्वत आनंद मिल जाता। जब सनातन सुख प्राप्त होता है तब सच्चिदानंद हो जाता है।

'शुद्धात्मा' शब्द संज्ञा रूपी है

प्रश्नकर्ता : आत्मा सच्चिदानंद घन है, फिर 'शुद्धात्मा' क्यों कहा है?

दादाश्री : आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप ही है। लेकिन इन लोगों को 'सच्चिदानंद' शब्द क्यों नहीं दिया? क्योंकि 'सच्चिदानंद', वह गुणवाचक शब्द होने से इन लोगों को समझ में नहीं आएगा, इन्हें शुद्धात्मा की ज़रूरत है, इसलिए इन लोगों को 'शुद्धात्मा' शब्द दिया है।

दरअसल आत्मा तो 'आकाश' जैसा है, और यह शुद्धात्मा, यह तो एक संज्ञा है। कैसी संज्ञा है?

प्रश्नकर्ता : पहचानने के लिए।

दादाश्री : नहीं। इस देह द्वारा तुझसे चाहे कैसे भी काम हो जाएँ, अच्छे हों या बुरे हों, तू तो शुद्ध ही है। तब कोई कहे कि, 'हे भगवान, मैं शुद्ध ही हूँ? लेकिन इस देह से जो उल्टे काम होते हैं, वे?' तब भी भगवान कहेंगे, 'वे कार्य तेरे नहीं हैं। तू तो शुद्ध ही है लेकिन यदि तू माने कि ये कार्य मेरे हैं, तो तुझे चिपकेंगे।' इसलिए शुद्धात्मा शब्द, उसके लिए 'संज्ञा' लिखा गया है।

शुद्धता में रहने के लिए शुद्धात्मा कहो

अब, शुद्धात्मा कहने की ज़रूरत क्यों पड़ी? ज्ञान देते समय शुद्धात्मा (शब्द) क्यों देते हैं?

प्रश्नकर्ता : ताकि खुद को जो शुद्धपन है, वह टिका रहे। इसीलिए देते हैं न?

दादाश्री : अब, शुद्ध हो चुका है। अब आत्मा संबंधी किसी भी प्रकार का विचार मत करना और मेरी आज्ञा में रहना। रह पाओगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : रह पाऊँगा।

दादाश्री : 'चंदूभाई के हाथों चाहे कितना भी भयंकर (खराब) कार्य हो जाए, यदि खून हो जाए तो?' तब कहें, 'फिर भी तू खुद शुद्ध ही

है।' तेरा शुद्धपन चूकना नहीं चाहिए। यदि चूक गया तो बिगड़ जाएगा?

प्रश्नकर्ता : वहाँ शुद्धपन को किस तरह से जागृत रखना है?

दादाश्री : शुद्ध ही हूँ, तू खुद शुद्ध ही है। यह जो हो गया, वह तो गया और वह व्यस्थित के ताबे में था। लेकिन उस समय शुद्धपन नहीं रहता और शंका होती है न। इसलिए हमने शुद्धात्मा (शब्द) दिया है कि चाहे कैसी भी स्थिति हो, तू शुद्ध ही है, ऐसा मानना। अत: सबकुछ समझकर तू शुद्धात्मा बना है। यों ही ऐसा गप्प नहीं मारी है।

नि:शंक होकर शुद्धात्मा में रहो

प्रश्नकर्ता : आपने शुद्धात्मा किसलिए कहा? सिर्फ आत्मा ही क्यों नहीं कहा? आत्मा भी चेतन तो है ही न?

दादाश्री : शुद्धात्मा के अलावा दूसरे सभी परमाणु हैं, वे अनंत हैं, फिज़िकल हैं, उनके अंदर भगवान फँसे हुए हैं। शुद्धात्मा अर्थात् शुद्ध चेतन ही। शुद्ध इसलिए कहना है कि पहले मन में ऐसा लगता था कि 'मैं पापी हूँ, मैं ऐसा नालायक हूँ, मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ।' ऐसे तरह-तरह के खुद पर जो आरोप थे, वे सभी आरोप निकल गए। शुद्धात्मा के बजाय सिर्फ 'आत्मा' कहेंगे तो खुद की शुद्धता का भान भूल जाएगा, निर्लेपता का भान चला जाएगा। इसलिए 'शुद्धात्मा' कहा है।

और 'शुद्धात्मा' किसलिए कहा गया है 'इसे'? कि संपूर्ण संसार काल पूर्ण होने के बावजूद 'उसे' अशुद्धता छूती ही नहीं, इसलिए शुद्ध ही है। लेकिन 'खुद को' 'शुद्धात्मा' की 'बिलीफ' नहीं बैठती न? 'मैं' शुद्ध किस तरह से हूँ? 'मुझसे इतने पाप होते हैं, मुझसे ऐसा होता है, वैसा होता है।' इसलिए मैं शुद्ध हूँ, वह 'बिलीफ' 'उसे' बैठती ही नहीं और शंका रहा करती है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ किस तरह से कह सकते हैं? मुझे शंका है।'

अत: इस 'ज्ञान' के बाद अब तुझे 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का *लक्ष* (जागृति) बैठा है, इसलिए अब तुझसे चाहे कैसा भी कार्य हो जाए, अच्छा या बुरा, उन दोनों का मालिक 'तू' नहीं है। 'तू' शुद्ध ही है। तुझे पुण्य का दाग़ नहीं लगेगा और पाप का भी दाग़ नहीं लगेगा इसलिए 'तू' शुद्ध ही है। तुझ पर शुभ का भी दाग़ नहीं लगेगा और अशुभ का भी दाग़ नहीं लगेगा। हम 'ज्ञान' देने के साथ ही कहते हैं न, कि 'अब तुझे ये सब स्पर्श नहीं करेगा।' वह नि:शंक हो जाए, उसके बाद उसकी गाड़ी चलती है।

शुद्धात्मा की ज़रूरत क्यों है? ये लोग कहते हैं कि 'मैं पापी हूँ'। तब कहे, ''यदि 'तू' 'विज्ञान' को जान लेगा तो तुझे पाप छू नहीं सकेगा। 'तू' 'शुद्धात्मा' ही है, लेकिन 'तेरी' 'बिलीफ़ रोंग' है।'' जिस प्रकार किसी मनुष्य ने दिन में भूत की बात सुनी हो, और रात को रूम में अकेला सो जाए, तो रात को अगर अंदर प्याला खड़का कि वहीं पर 'उसमें' 'रोंग बिलीफ़' घुस जाती है कि कोई भूत है। अब जब तक यह 'रोंग बिलीफ़' नहीं निकलती तब तक 'उसकी' दशा ऐसा ही रहती है, घबराहट होती है।

यदि शंका होगी तो तुझे चिपकेंगे और तू नि:शंक है तो तुझे स्पर्श नहीं करेंगे। 'दादा' की आज्ञा में रहेगा तो तुझे स्पर्श नहीं करेगा!

आपको मूल आत्मा की जो शंका थी वह चली गई, इसलिए दूसरी शंकाएँ भी चली जाती हैं लेकिन फिर भी बुद्धिशाली लोगों को कहीं

फिर से शंका, मूल स्वभाव अगर वैसा हो न, तो फिर से शंका होने लगती है।

मूल हकीकत पर शंका होने जैसा है ही नहीं। वास्तव में 'तू' ऐसी कोई क्रिया करता ही नहीं है। यह तो सिर्फ भ्रांति ही है, गाँठ पड़ चुकी है। शुद्धात्मा, वह संज्ञा है। खुद शुद्ध ही है, तीनों काल में शुद्ध ही है, यह समझाने के लिए है।

प्योर कौन और इम्प्योर कौन?

प्रश्नकर्ता : मैं प्योर सोल (शुद्धात्मा) हूँ, तो यह चंदू इम्प्योर किस तरह से हुआ?

दादाश्री : ये जो छः तत्त्व हैं न, वे अविनाशी हैं। इस प्रकार आमने-सामने घूमने से विनाशी अवस्था हो जाती है।

तो यह जो चंदूभाई है, वह इस *पुद्गल* का स्वरूप है और 'खुद' ऐसा मानता है कि 'मैं चंदू हूँ'। इसीलिए ये दोष होते रहते हैं। वास्तव में यह खुद का स्वरूप नहीं है। खुद इम्प्योर हुआ ही नहीं है लेकिन इम्प्योर होने की भ्रांति ही है। क्योंकि तू तो प्योर ही था लेकिन भ्रांति से तेरी मान्यता में यह आया कि 'मैं यह चंदूभाई हूँ।' बाकी, बाइ रिलेटिवली स्पिकिंग यू आर चंदू। रियली स्पिकिंग यू आर प्योर सोल, नॉट रिलेटिवली स्पिकिंग। अब, 'इसे' क्या करना चाहिए कि रियली स्पिकिंग में ही रहना चाहिए और रिलेटिवली स्पिकिंग में 'तू' अपने आपको जो मानता था, वह इगोइज़म था। 'आप' तो चेतन हो, कुदरत आपका क्रिएशन नहीं कर सकती। कुदरत निर्जीव है। अतः आपको कुदरत ने नहीं बनाया है। आप क्रीचर नहीं हो कुदरत के।

शुद्धात्मा शब्द का मर्म

प्रश्नकर्ता : तो शुद्धात्मा का मर्म क्या है?

दादाश्री : 'शुद्धात्मा' का मर्म यह है कि वह असंग है, निर्लेप है, जब कि 'आत्मा' ऐसा नहीं है। 'आत्मा' लेपित है और 'शुद्धात्मा', वह तो परमात्मा है। सभी धर्म वाले कहते हैं न, 'मेरा आत्मा पापी है', फिर भी शुद्धात्मा को कोई परेशानी नहीं है।

शुद्धात्मा यही सूचित करता है कि हम अब निर्लेप हो गए, पाप गए सभी। यानी शुद्ध उपयोग के कारण शुद्धात्मा कहा है। वर्ना 'आत्मा' वाले को तो शुद्ध उपयोग होता ही नहीं। आत्मा तो, सभी आत्मा ही हैं न! लेकिन जो शुद्ध उपयोगी होता है, उसे शुद्धात्मा कहा जाता है। आत्मा तो चार प्रकार के हैं, अशुद्ध उपयोगी, अशुभ उपयोगी, शुभ उपयोगी और शुद्ध उपयोगी, ऐसे सब आत्मा हैं। इसलिए अगर सिर्फ 'आत्मा' बोलेंगे तो उसमें कौन-सा आत्मा? तब कहे, 'शुद्धात्मा।' यानी कि शुद्ध उपयोगी, वह शुद्धात्मा होता है। अब उपयोग फिर शुद्ध रखना है। उपयोग शुद्ध रखने के लिए शुद्धात्मा है, नहीं तो उपयोग शुद्ध रहेगा नहीं न?

एक व्यक्ति ने पूछा कि, 'दादा, बाकी सब जगह आत्मा ही कहलवाते हैं और सिर्फ आप ही शुद्धात्मा कहलवाते हैं, ऐसा क्यों?' मैंने कहा कि, 'वे जिसे आत्मा कहते हैं न, वह आत्मा ही नहीं है और हम शुद्धात्मा कहते हैं, इसका कारण अलग है।' हम क्या कहते हैं? कि तुझे एक बार 'रियलाइज़' करवा दिया कि तू शुद्धात्मा है और ये चंदूभाई अलग है, ऐसा तुझे बुद्धि से भी समझ में आ गया। अब चंदूभाई से बहुत ख़राब काम हो गया, लोग निंदा करें, ऐसा काम हो गया, उस समय तुझे 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा *लक्ष* चूकना नहीं चाहिए, 'मैं अशुद्ध हूँ' ऐसा कभी भी मत मानना। ऐसा कहने के लिए 'शुद्धात्मा' कहना पड़ता है। 'तू अशुद्ध नहीं हुआ है' इसलिए

कहना पड़ता है। हमने जो शुद्धात्मापद दिया है, वह शुद्धात्मापद-शुद्धपद, फिर बदलता ही नहीं। इसलिए शुद्ध शब्द रखा है। अशुद्ध तो, यह देह है इसलिए अशुद्धि तो होती ही रहेगी। किसी को अधिक अशुद्धि होती है, तो किसीको कम अशुद्धि होती है, ऐसा तो होता ही रहेगा। और उसका फिर उसके खुद के मन में घुस जाता है कि 'मुझे तो दादा ने शुद्ध बनाया फिर भी यह अशुद्धि तो अभी तक बाकी है', और ऐसा यदि घुस गया तो फिर बिगड़ जाएगा।

'शुद्धात्मा' है, वैज्ञानिक शब्द

अब यदि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह जॉइन्ट हो जाए तो फिर उसे कुछ स्पर्श भी नहीं करेगा और बाधक भी नहीं होगा। निश्चय से वह शुद्ध ही है। फिर अब, दोबारा वह बदल ही नहीं सकता। प्रकृति निश्चय से ही उदय कर्म के अधीन है, वह अपने अधीन नहीं है।

अत: जो शुद्ध ही है, वह 'मैं हूँ', ऐसा तय कर लेता है। और फिर निश्चय से शुद्ध ही है। वह शुद्धता बदलनी नहीं चाहिए कि मुझसे ऐसे काम हो गए। काम चंदूभाई से हुए हों और खुद अपने ऊपर ले लेता है कि मुझसे ऐसा हुआ। अब आप शुद्धात्मा बने हैं, वह निश्चय से है, न कि दूसरी तरह से। निश्चय से शुद्धात्मा का मतलब अब फिर कुछ संयोगों में आप ऐसा नहीं बोल सकते कि 'मैं शुद्धात्मा होऊँगा या नहीं?' भले ही कितना भी खराब काम हो जाए, फिर भी वह प्रकृति के अधीन है, आपको उससे क्या लेना-देना? शुद्धात्मा होकर भी लोग वह भूल जाते हैं न, कि अब मैं शुद्ध नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन वे क्यों भूल जाते हैं?

दादाश्री : हाँ। उन्हें भूलना नहीं चाहिए, वही उनका पुरुषार्थ है!

प्रश्नकर्ता : 'हम शुद्धात्मा हैं', रहे, वहाँ द्वंद्व नहीं है, वह तो ठीक है लेकिन शुद्ध शब्द का उपयोग क्यों करना पड़ता है?

दादाश्री : हाँ, वह बहुत ही ज़रूरी है। वह तो बहुत वैज्ञानिक शब्द है, शुद्ध बोलना है। आत्मा क्यों नहीं कहा? कोई और शब्द क्यों नहीं रखा? तब कहते हैं, ज्ञानी पुरुष ने तुझे शुद्धात्मा पद दिया है। और उसके बाद यदि चंदूभाई से ऐसा अघटित कार्य हो जाए, जिसकी सारी दुनिया निंदा करे फिर भी तू शुद्ध ही है। उसे मत छोड़ना, तो फिर कोई भी तेरा बाल बांका नहीं कर सकेगा। यदि तेरी श्रद्धा डिग गई तो मार खाएगा। तू शुद्धता छोड़ना ही मत। वह कर्म अपना फल देकर चला जाएगा। वर्ना मन में रह जाएगा कि यह खराब काम हुआ इसलिए मैं बिगड़ गया। बिगड़ा यानी गॉन। अत: चाहे कितना भी खराब काम हो जाए, सारा संसार निंदा करे फिर भी आपका शुद्धात्मा पद नहीं टूटेगा। ऐसा यह ज्ञान मैंने दिया है।

फिर भी यदि कोई मन में ऐसा मान ले कि 'अब, मुझे कोई परेशानी नहीं होगी' तब भी वह लटक जाएगा। हाँ, डरते रहना है। डरते तो रहना ही चाहिए। हमें कहना है, 'चंदूभाई डरकर चलो, महावीर भगवान भी डरकर चलते थे।' क्या कहना है पड़ोसी को? डरो, भय मत रखो लेकिन डरो।

प्रश्नकर्ता : वह खुद तो शुद्ध ही है लेकिन मान्यता उल्टी थी।

दादाश्री : हाँ, शुद्ध ही है। मान्यता उल्टी थी, अब, वह सीधी हो गई। फिर से वह उल्टी

मान्यता न घुस जाए इसलिए तू यह मत छोड़ना कि 'तू शुद्ध ही है'। क्योंकि आत्मा का स्वभाव कैसा है? भगवान महावीर ने कहा है कि 'शुद्धात्मा के बारे में समझाना। जो साधक साध्यपन को प्राप्त करे, उसे ऐसा समझाना कि साध्यपन में शुद्धात्मा ही है'। तब वह कहे 'शुद्धात्मा कहते हैं उसके बजाय अन्य कुछ, सिर्फ आत्मा कहेंगे तो नहीं चलेगा?' तब कहेंगे 'नहीं, चलेगा। क्योंकि ऐसा कुछ कर्म का उदय आएगा, जिससे कि उस समय उसे खुद को ही ऐसा लगेगा कि मैंने ऐसा किया, मैंने ऐसा किया', यों कहते ही वह लटक जाएगा। क्योंकि कर्ता कौन है? व्यवस्थित। किसे किया? तो कहेंगे, 'रिलेटिव को। मैं रियल हूँ।' अब, आत्मा का गुण क्या है? तब कहेंगे, जैसा चिंतन करे वैसा बन जाता है। अत: यदि शुद्धात्मा का चिंतवन हुआ तो शुद्धात्मा रहेगा वर्ना चंदूभाई ही बन जाएगा।

जो रिलेटिव को देखने लगे, वही रियल है

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा की स्थापना अर्थात् क्या वह रियल वस्तु है।

दादाश्री : हाँ, रियल वस्तु।

प्रश्नकर्ता : अत: उस पर तो जागृति रखनी ही चाहिए, वह आज्ञा नंबर वन है। बाकी, सब रिलेटिव है और खुद रियल है।

दादाश्री : और इससे तो एकदम से सारे संसार को रिलेटिव में रख दिया। अब, आप एकाध आज्ञा का पालन करते हो क्या? किस आज्ञा का पालन करते हो?

प्रश्नकर्ता : रियल देखने का।

दादाश्री : ऐसा? सिर्फ, रियल ही या रिलेटिव भी? रियल और रिलेटिव दोनों साथ में हो सकते हैं। सिर्फ एक ही नहीं रह सकता। अत: यदि यह दिखाई दिया तो वह दिखाई देगा ही। यदि वह दिखाई दिया तो यह दिखाई देगा ही।

प्रश्नकर्ता : अत: यदि रियल दिखाई दिया तो रिलेटिव भी दिखाई देगा।

दादाश्री : रिलेटिव होगा तभी रियल दिखाई देगा और यदि रियल दिखाई दिया तो रिलेटिव भी दिखाई देगा ही। वह *अविनाभावी* (परस्पर) संबंध है। यदि एक होगा तो दूसरा होगा ही! रियल उसे कहते हैं कि जो रिलेटिव को देखे।

प्रश्नकर्ता : रियल होकर रियल को भी देख सकता है न?

दादाश्री : देख सकता है, हाँ। जिसको रिलेटिव को देखने व जानने के अलावा और कोई क्रिया नहीं है, वह रियल है। सारा संसार रिलेटिव में हैं। देखने-जानने के अलावा, बाकी की सभी क्रियाओं में पड़ा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् रिलेटिव मात्र को देखने-जानने की क्रिया सिर्फ रियल की ही है?

दादाश्री : हाँ, अन्य कोई तो देख ही नहीं सकता।

जो रियल और रिलेटिव को अगल करे, वह प्रज्ञा है

प्रश्नकर्ता : बाहर रियल व रिलेटिव देखते हुए जाउँ तो फिर वह कौन देखता है? शुद्धात्मा देखता है क्या?

दादाश्री : वह तो प्रज्ञा देखती है, आत्मा नहीं देखता। और क्योंकि प्रज्ञा देखती है इसलिए वह आत्मा के खाते में ही गया। बुद्धि और प्रज्ञा, दोनों के देखने-जानने में अंतर है। वह (बुद्धि) इन्द्रियगम्य है जबकि यह (प्रज्ञा) अतीन्द्रियगम्य है।

सारे विनाशी को तो हम पहचान सकते हैं न! मन-वचन-काया से जो यह सबकुछ आँखों से दिखाई देता है, कानों से सुनाई देता है, वह सारा ही रिलेटिव है।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है, लेकिन इस रियल और रिलेटिव को अलग कौन करता है?

दादाश्री : भीतर वह जो प्रज्ञा है, वह दोनों को अलग करती है। रिलेटिव को अलग करती है और रियल को भी अलग करती है।

प्रश्नकर्ता : रियल, रिलेटिव और प्रज्ञा, ये तीन चीज़ें हैं, ऐसा हुआ न, तो प्रज्ञा रियल से अलग चीज़ है न?

दादाश्री : वह प्रज्ञा रियल की ही शक्ति है लेकिन बाहर निकल आई शक्ति है। जब बाहर रिलेटिव नहीं होता तब वह भीतर एकाकार हो जाती है।

समझकर देखो संसार को दिव्यचक्षु से

प्रश्नकर्ता : जब-जब भी हम अपने व्यवहार में और वर्तन में आते हैं तब 'मैं शुद्धात्मा हूँ' या 'चंदूभाई हूँ', वह कुछ भी पता नहीं चलता। रियल-रिलेटिव में उलझन हो जाती है।

दादाश्री : उसे समझ लेने की ज़रूरत है। 'आप' चंदूभाई भी हो और 'आप' 'शुद्धात्मा' भी हो! 'बाय रिलेटिव व्यू पोइन्ट' से आप 'चंदूभाई' और 'बाय रियल व्यू पोइन्ट' से आप 'शुद्धात्मा' हो! 'रिलेटिव' सारा विनाशी है। विनाशी भाग में आप चंदूभाई हो! विनाशी व्यवहार सारा चंदूभाई का है और अविनाशी आपका है! अब 'ज्ञान' के बाद अविनाशी में आपकी जागृति रहती है।

समझने में ज़रा कमी रह जाए तो कभी किसी से ऐसी भूल हो जाती है। सभी से नहीं होती।

(ज्ञानविधि में आपको) ये दिव्यचक्षु दिए हैं। (इसलिए) अब इन बाहर की आँखों से पैकिंग दिखाई देगा और अंदर की आँखों से शुद्धात्मा दिखाई देगा। आज आपकी समझ में आया यह? बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट यू आर?

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई।

दादाश्री : और रियल व्यू पोइन्ट से?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : तो आपकी वाइफ (पत्नी) रिलेटिव व्यू पोइन्ट से?

प्रश्नकर्ता : वाइफ।

दादाश्री : और रियल व्यू पोइन्ट से?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : वह भी शुद्धात्मा है, वह भले ही जानती न हों, लेकिन अंदर शुद्धात्मा है। जो नहीं जानता वह (संसार में) मार खाता है। यह जानने की ज़रूरत है। असल में यही वास्तविकता है। यह गाय है न, वह बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट गाय है और बाइ रियल व्यू पोइन्ट शुद्धात्मा। यह बकरी रिलेटिव व्यू पोइन्ट से बकरी है और रियल व्यू पोइन्ट से शुद्धात्मा। भगवान की भाषा में हर एक पैकिंग में शुद्धात्मा का माल है। समुद्र में कितने प्रकार की पैकिंग होती हैं, है न? बड़ी-बड़ी व्हेल मछलियाँ और इतनी छोटी मछलियाँ। यहाँ गाय-भैंस, हाथी वेराइटीज़ ऑफ पैकिंग, (लेकिन) अंदर माल एक ही प्रकार का, शुद्धात्मा।

ये सब तरह-तरह की पैकिंग हैं। ये पुरुष पैकिंग, स्त्रियाँ पैकिंग, कुत्ते, बिल्ली, गधा, सभी पैकिंग के खुद भगवान हैं। यह देह तो पैकिंग है। भीतर जो बैठे हैं, वे भगवान हैं।

यह आपकी भी चंदूलाल रूपी पैकिंग है और भीतर भगवान विराजमान हैं। यह गधा है, तो यह भी गधे की पैकिंग है और भीतर भगवान विराजमान है। लेकिन इन अभागों की समझ में नहीं आता, इसलिए गधा सामने आए, तो गाली देते हैं, जिससे गधे में विराजमान भगवान नोट कर लेते हैं और कहते हैं, 'हम्म्... मुझे गधा कह रहा है, जा अब तुझे भी एक जन्म गधे का मिलेगा।'

प्रैक्टिस से खिलती है, दिव्यदृष्टि

अब, बाहर जाओगे तो दिव्यचक्षु का उपयोग करोगे न? ऐसा है न, अनादिकाल से अज्ञान का परिचय है, अत: इसकी प्रेक्टिस करने के लिए यदि दो-चार बार प्रैक्टिस करोगे न, फिर शुरू हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य में तो पता चल जाता है कि इसमें शुद्धात्मा है लेकिन इन पेड़-पौधों को देखने की प्रैक्टिस हमसे नहीं हो पाती!

दादाश्री : आपको वह प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। अनादि से उल्टा अभ्यास है न, तो वह उल्टा ही चलता रहता है। डॉक्टर ने कहा हो कि, 'आप सीधे हाथ से मत खाना', फिर भी अपना सीधा हाथ घुस ही जाता है। खाने के लिए चार दिन तक थोड़ी सी जागृति रखनी पड़ती है। अत: अभी से इसका अभ्यास कर लेना। दिव्यचक्षु से देखते हुए जाना न! धीरे-धीरे सेटिंग करते जाना तो फिट होता चला जाएगा, गाय-भैंस सभी में है। वह शुद्धात्मा चेन्ज नहीं हुआ है, यह पैकिंग चेन्ज हुई है। शुद्धात्मा तो वही है, सनातन है।

'मैं शुद्धात्मा हूँ', बोलने के पीछे का मर्म

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने से पहले क्या हम ऐसा नहीं बोलते थे? 'मैं चंदूभाई हूँ' 'मैं चंदूभाई हूँ'। लेकिन जो समझते हैं कि वह प्रतीति में होता ही है। अब, ज्ञान लेने के बाद आपने जो शुद्धात्मा का *लक्ष* दिया है, उसके बाद आप बार-बार ऐसा जो बोलने के लिए कहते हैं, 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ', उसके पीछे मर्म क्या है? उसके पीछे रहस्य क्या है?

दादाश्री : यदि कर्मों का कर्ज़ चढ़ा हुआ है तो बोलने की ज़रूरत है। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह हम जिस जगह पर हैं, उस जगह पर मूल क्षेत्र में (रहकर) शुद्धात्मा बोलते हैं। एक बार समझने के बाद वह *लक्ष* में रहेगा। बस, हो गया। लेकिन हम तो यहाँ से हज़ार मील तक उल्टे चले हैं और वहाँ हमने जाना कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', तो वापस लौटना पड़ेगा न। वहाँ पर आप ऐसा पूछो कि साहब 'मैं शुद्धात्मा बन गया?' तब, भाई, इतना उल्टा चले हो इसलिए वहाँ से जब वापस लौटोगे तब जाकर मूल शुद्धात्मा बनोगे। इसीलिए 'शुद्धात्मा, शुद्धात्मा' बोलना पड़ता है। उसके लिए यह सब करना पड़ता है।

यह तो थोड़ा बहुत साधारण रूप से कहते हैं कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' थोड़ा दो-दो मिनट या पाँच मिनट बोले तो ठीक है और यहाँ पर विधि करते समय बोलते हैं, वह भी ठीक है। जैसे कि आप चंदूलाल हो और छत में जाकर आप 'मैं चंदूलाल हूँ, मैं चंदूलाल हूँ' ऐसे बोलते रहो तब लोग कहेंगे, 'वह तो आप हो ही, फिर उसका गाना क्यों गा रहे हो?' इस तरह से आप शुद्धात्मा हो ही, फिर भी 'मैं शुद्धात्मा हूँ', यह इसलिए बोलना है कि जो ज़्यादा उल्टा चला गया था। वह उतना ही वापस लौट रहा है। बाकी, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह *लक्ष* में रहता ही है। यह जो 'मैं चंदूभाई हूँ' वह उल्टा गया था इसलिए 'मैं चंदूभाई हूँ', ऐसा बोलते थे। अब

'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोल रहे हो। ऐसा करते-करते वह (दृष्टि) वापस बदली। 'मैं चंदूभाई हूँ' बोलते थे तो चंदूभाई का असर होता था और अभी 'मैं शुद्धात्मा' बोलोगे तो शुद्धात्मा का असर होगा।

जो चित्त अशुद्ध हो गया था, अब वह वापस लौटा।

शुद्ध चित्त, वही शुद्धात्मा

प्रश्नकर्ता : अशुद्ध चित्त में जो अशुद्धि है, उसका स्वरूप क्या है?

दादाश्री : चित्त तो जब कभी खुद के स्वरूप में न आकर, दूसरी तरफ ही देखता है तब अशुद्ध हो जाता है। अन्य कहीं पर दृष्टि गई कि अशुद्ध कहलाएगा। यदि खुद के स्वभाव की तरफ देखेगा तो शुद्ध कहलाएगा।

लोगों का चित्त संसार की तरफ दृष्टि करके देखता है। इसलिए क्रोध-मान-माया-लोभ उत्पन्न हो गए हैं और उससे बहुत दुःख पड़ते हैं। लेकिन उसका उपाय नहीं सूझता न! इसलिए एक में राग करता है, दूसरे में द्वेष करता है। जहाँ पर परेशानी होती है वहाँ द्वेष करता है। जहाँ पर अनुकूलता होती है, वहाँ पर राग करता है। क्योंकि दोनों स्वभाव हैं। *शाता* (सुख परिणाम) और *अशाता* (दुःख परिणाम) वेदनीय दोनों साथ-साथ ही चलते रहते हैं। कई बार *अशाता* ज़्यादा रहती है, ऐसा चलता रहता है। इस दुषमकाल में *शाता* थोड़ी सी ही है। थोड़ी देर के लिए लेकिन उसके आधार पर, लालच की वजह से बैठा रहता है न, कि 'अभी ठंडक मिलेगी, अभी ठंडक मिलेगी।' अगले साल, अगले साल' यों कहकर समय बिताता है न! *अशाता* में समय बिताता है न! आशा का मारा है न! अच्छे काल में *अशाता* कम रहती है और *शाता* ज़्यादा। इस दुषमकाल में *अशाता* ज़्यादा रहती है और *शाता* कम। यह सब चित्त की ही झंझट है। जो अशुद्ध चित्त है, उसी की झंझट है। चित्त शुद्ध हो जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो शुद्ध चित्त और अशुद्ध चित्त में क्या फर्क है?

दादाश्री : अशुद्ध चित्त उल्टा देखता है कि 'ये मेरे पापा हैं और ये चाचा हैं।' 'बेटे के साथ मुझे अच्छा नहीं लगता' ऐसा कहता है। आत्मा, शुद्ध चित्त है। संसार, अशुद्ध चित्त का फल है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो बुद्धि और ज्ञान का विषय है न। उसमें चित्त कैसे आता है?

दादाश्री : बुद्धि की कोई झंझट नहीं है। बुद्धि तो अंत में डिसिज़न लेती है और कुछ नहीं करती।

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और 'मैं चंदूभाई नहीं हूँ', वह चीज़ तो ज्ञान से ही देखी जा सकती है न? उसमें चित्त कहाँ आया?

दादाश्री : चित्त अर्थात् ज्ञान-दर्शन। चित्त इन दो गुणों का अधिकारी है। यदि ये दोनों ही गुण अशुद्ध हों तो वह अशुद्ध चित्त कहलाता है और शुद्ध हो तो शुद्ध चित्त कहलाता है।

शुद्ध ज्ञान + शुद्ध दर्शन = शुद्ध चित्त = शुद्धात्मा।

अशुद्ध ज्ञान + अशुद्ध दर्शन = अशुद्ध चित्त = अशुद्धात्मा।

शुद्धात्मा को क्या क हते हैं, वह आप जानते हो?

'मैं शुद्धात्मा हूँ', वही शुद्ध चिद्रूप है। शुद्ध चिद्रूप उसी को शुद्धात्मा कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा और चित्त में क्या अंतर है?

दादाश्री : आत्मा और चित्त में अंतर सिर्फ इतना ही है कि चित्त कब तक है? जब तक अशुद्धि है तब तक है। यदि चित्त में से अशुद्धि कम होते-होते निन्यानवे प्रतिशत शुद्धि हो गई फिर भी वह अशुद्ध चित्त ही कहलाएगा और यदि सौ प्रतिशत हो गई तो वह ज्ञान कहलाएगा। आत्मा कहलाएगा। जो अशुद्ध ज्ञान व दर्शन है, वह चित्त है और शुद्ध ज्ञान व दर्शन है, वह आत्मा है। अत: इस अशुद्ध चित्त को शुद्ध करने की ज़रूरत है।

प्रत्यक्ष से प्रकट होता है या पुस्तक के दीये से?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लिए बगैर पुस्तक में पढ़कर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोले, तो भी उसका फल मिलेगा न?

दादाश्री : कुछ भी फल नहीं मिलेगा, 'ज्ञान' लिए बगैर कोई 'शुद्धात्मा हूँ' बोले तो काम नहीं आएगा। उसे 'शुद्धात्मा' तो याद ही नहीं आएँगे न!

और किताब में तो ऐसा लिखा हुआ है कि 'आत्मा शुद्ध है और तू शुद्धात्मा है। यह सब तू नहीं है और संसार में शुद्धात्मा के रूप में हम कुछ कर सकें, ऐसे हैं ही नहीं। वह द्रव्य अपना काम करता है, यह द्रव्य अपना काम करता है।' यह सब कहना चाहते हैं। लेकिन लोगों को शुद्धात्मा रहेगा ही किस तरह? यह तो अहंकार और क्रोध-मान-माया-लोभ सबकुछ साथ में हैं, तो उसे शुद्धात्मा किस तरह से रहेगा? यों पूरे दिन रटकर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलता है, लेकिन उसे शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठता नहीं है न! 'ज्ञानी पुरुष' पाप जला दें, तब शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठता है और वह *लक्ष* हर समय रहता है, नहीं तो *लक्ष* में रहे ही नहीं न! यानी कि पहले पाप धुल जाने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपकी पाँच आज्ञाएँ लिखी हुई हों, तो आज से सौ-दो सौ वर्ष बाद भी कोई पाँच आज्ञा पढ़कर बोले, उन पर विचार करे, तो फिर उसे शुद्धात्मा का पद मिलेगा या नहीं?

दादाश्री : नहीं, नहीं। वह तो, कोई ज्ञानी रहेंगे, दो सौ-पाँच सौ वर्ष तक कुछ न कुछ स्फुरित होगा। किसी न किसी में, कभी न कभी 'प्रकाश' होता ही रहेगा, तो वैसे कोई होंगे तो सभी के काम आएँगे। बाकी, यों ही शुद्धात्मा नहीं हुआ जा सकता।

ज्ञानी पुरुष द्वारा दिया गया शुद्धात्मा काम का

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलने से शुद्धात्मा हुआ जा सकता है?

दादाश्री : ऐसे नहीं हो सकते। ऐसा तो कितने ही लोग बोलते हैं न कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' लेकिन कुछ होता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आपके पास से ज्ञान उपलब्ध नहीं हुआ हो, वह यदि किताब में से पढ़कर अथवा तो किसीके कहने से 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोले तो फ़ायदा होगा?

दादाश्री : उससे कुछ नहीं होगा। ऐसे लाख जन्मों तक 'शुद्धात्मा' बोलेगा, तब भी कुछ होगा नहीं।

जैसे कि आपका एक दोस्त हो, वह

आपसे बात करते-करते सो जाए, लेकिन आप ऐसा समझो कि वह जग रहा है, तो आप उसे रुपये देने के लिए पूछते हो, फिर से पूछो उससे पहले ही वह कहता है कि, 'मैं तुझे पाँच हज़ार रुपये दूँगा।' तो हम क्या वह सच मान लें? हमें पता तो लगाना पड़ेगा न कि वह नींद में है या जागते हुए बोल रहा है? अगर नींद में बोल रहा होगा तो हम सारी रात बैठे रहेंगे तो भी कुछ देगा नहीं और अगर जागृत अवस्था में बोल रहा होगा तो हमें देगा। उसी तरह से यह नींद में बोलता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', इसलिए कुछ होगा नहीं। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह भान 'ज्ञानी पुरुष' का दिया हुआ होना चाहिए यानी कि जग रहा हो और बोले तो काम का। इसी तरह मैं आपको जाग्रत करके 'शुद्धात्मा हूँ' बुलवाता हूँ, यों ही नहीं बुलवाता!

नहीं है महात्मा में मिकेनिकल

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा बोलते रहने से वह मिकेनिकल नहीं हो जाता?

दादाश्री : अपने महात्माओं के लिए मिकेनिकल नहीं होता लेकिन बाहर दूसरों के लिए हो जाएगा। दूसरे खुद ही मिकेनिकल है, इसलिए वह मिकेनिकल ही होगा।

प्रश्नकर्ता : यदि कोई अज्ञानता में मिकेनिकल रूप से 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोले तो?

दादाश्री : उसमें कुछ नहीं मिलेगा और ज्ञान प्राप्त व्यक्ति मिकेनिकल नहीं बोलता। मिकेनिकल जैसा लगता है सही लेकिन वह मिकेनिकल नहीं बोलता। यदि ज्ञान प्राप्त न किया हो और 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' रात भर भी गाएगा तो भी कुछ नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : यदि वह सीधा बोलेगा तो भी मिकेनिकल होगा?

दादाश्री : हाँ। वह सीधा बोलेगा तो भी मिकेनिकल। क्योंकि तू जो है वह तेरी मान्यता अभी टूटी नहीं है। और तू कहता है कि 'मैं नगीनदास हूँ', वापस ऐसा भी बोलता है।

सोहम् से शुद्धात्मा नहीं साधा जा सकता

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा बोलना और 'सोहम्' बोलना, इसमें क्या फ़र्क़ है?

दादाश्री : सोहम् बोलने का अर्थ ही नहीं है। 'शुद्धात्मा' तो 'आप' हो ही। सोहम् का अर्थ क्या हुआ? कि 'वह मैं हूँ', उसमें अपना क्या कल्याण हुआ? अत: 'मैं शुद्धात्मा हूँ' इसीमें खुद का कल्याण है, इसमें 'यह शुद्धात्मा, वह मैं हूँ।' सोहम् तो शुद्धात्मा प्राप्त करने का साधन है। जिसे साध्य मिल जाए, उसके साधन छूट जाते हैं।

ज्ञान के बाद 'शुद्धात्मा' ध्यान में रहना चाहिए

प्रश्नकर्ता : जब फ़ुरसत में हो तब 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलें और जाप करें तो चलेगा क्या?

दादाश्री : वह जाप करने की चीज़ नहीं है। जाप करने वाला कौन है इसमें? अत: वह जाप की चीज़ नहीं है, वह ध्यान में रखना है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह ध्यान में रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या ऐसा बोलने से ज़्यादा ध्यान में नहीं रहेगा?

दादाश्री : थोड़ी देर बोलना चाहिए। मैंने 'ज्ञान' दिया उसके बाद आप शुद्धात्मा बन गए हो। अब क्या गाते रहना है वह?

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसकी माला जपने की ज़रूरत है क्या?

दादाश्री : उसकी माला जपने की कोई ज़रूरत नहीं है। आत्मा की माला मत घुमाना। वह माला रूपी नहीं है। वह शब्द रूपी नहीं है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह हमारे ध्यान में रहना चाहिए, बस। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा जो *लक्ष* रहता है, उसे शुद्धात्मा का ध्यान कहते हैं। वह शुक्ल ध्यान बर्त रहता है। कल्याण हो गया! अब, आगे-पीछे और कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।

रटन नहीं, सहज की बहुत कीमत है

प्रश्नकर्ता : अगर अधिक से अधिक यही रटन रहा करे कि 'मैं आत्मा हूँ' तो अच्छा है न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। रटन तो इस संसार दशा में, साधक दशा में करने की ज़रूरत है। यहाँ पर तो वह परमात्मा बन गया है। हमने यह ज्ञान दिया उसके बाद खुद परमात्मा बन गया है लेकिन प्रतीति से!

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञान' लेने के बाद 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा रटन और 'राम, राम' का नाम स्मरण, इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : ज़्यादा रटन करने की ज़रूरत ही नहीं है। रटन तो रात मैं थोड़ी देर के लिए करना चाहिए, लेकिन दिन भर 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा गाते रहने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं करते लेकिन 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह अपने आप आ जाता है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन रटन करने की ज़रूरत नहीं है। रटन करना और आ जाना, इन दोनों मैं अंतर है। अपने आप आ जाने में और रटन करने में अंतर है या नहीं? क्या अंतर है?

प्रश्नकर्ता : वह तो सहज रूप से आ जाता है।

दादाश्री : हाँ, सहज रूप से आ जाता है। अत: वह जो आपको सहज रूप से आ जाता है, वह तो बहुत ही कीमती है। यदि रटन करने की कीमत चार आने है तो इसकी कीमत अरबों रुपये हैं। इतनी ज़्यादा अंतर है दोनों में। इन दोनों बातों को आपने इकट्ठा कर दिया। अभी आपके ध्यान में 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा रहता है या 'वास्तव में मैं शुद्धात्मा हूँ', वह रहता है?

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ।'

दादाश्री : तो वह शुक्लध्यान कहलाता है। आपके ध्यान में शुद्धात्मा है, उसे शुक्लध्यान कहा है और शुक्लध्यान, वह प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण है। अत: आपके पास जो पूँजी है, वह ऐसी है कि वह अभी हिन्दुस्तान भर में, इस वर्ल्ड में कहीं भी नहीं है! इसलिए इस पूँजी का उपयोग सावधानी से करना और उसकी इससे तुलना मत करना। आपने किससे तुलना की?

प्रश्नकर्ता : 'राम' नाम।

दादाश्री : वह तो जाप कहलाता है। जाप तो एक प्रकार की शांति के लिए ज़रूरी है। जबकि यह तो सहज चीज़ है।

समरण से, शुद्धात्मा नहीं साध्य?

एक व्यक्ति ने कहा, 'मैं शुद्धात्मा हूँ, ऐसा याद करता रहता हूँ।' तब मैंने उसे कहा, 'अरे, याद करता रहता है तो भी शुद्धात्मा प्राप्त नहीं हुआ?' तब कहने लगा, 'नहीं। और दूसरे दिन तो

मुझे मन में ऐसा लगा कि वह कौन-सा शब्द था? कौन-सा शब्द, कौन-सा शब्द, तो चार घंटे तक वह शब्द याद ही नहीं आया।' यानी कि शब्द ही भूल जाता है। उस समरण से (नामस्मरण) कुछ *लक्ष* में नहीं बैठता। ऐसे समरण करने के बजाय 'वाइफ' का समरण करना अच्छा कि पकोड़े, जलेबी बनाकर तो देगी। ऐसे गलत समरण दे-देकर तो, न देवगति में गए, न ही यहाँ पर अच्छा सुख-वैभव मिला, यानी ऐसे भी भटका दिया और वैसे भी भटका दिया। यहाँ पर अगर सुख-वैभव मिल जाए तब भी समझें कि ठीक है।

ये तो कहेंगे, 'समरण दे रहे हैं, आप समरण करते रहना।' अरे भाई, अगर वह समरण भूल जाऊँ तब मुझे क्या करना चाहिए? और समरण तो कब रहता है कि जिस पर राग होता है न, तो अपने आप ही उसका समरण रहा करता है। या फिर जिस पर बहुत ही द्वेष हो, जिस पर बहुत चिढ़ हो, वह याद आता रहता है। यानी बहुत राग हो तो वह याद आता रहता है, उसका समरण रहता है।

और समरण का फल संसार, भटकते ही रहना। आपको समझ में आई यह बात? समरण का अर्थ समझ में आया न? यानी कि आत्मा सतत हाज़िर रहकर अपने आप ही वैसा बोलने लगना चाहिए। हम बुलवाएँ और वह बोले, ऐसा नहीं। अपने आप ही आना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह 'शुद्धात्मा हूँ' ऐसा अंदर से बोलना शुरू हो जाता है या नहीं?

दादाश्री : हो जाता है न!

प्रश्नकर्ता : तो फिर वह बोलता है या बुलवाता है?

दादाश्री : यह बोलते-बुलवाते का सवाल नहीं है इसमें। कोई बुलवाता भी नहीं है और बुलवाए तो वह बुलवाने वाला गुनहगार बन जाएगा।

यानी कि आप जो ढूँढ रहे हो न, वहाँ पर अँधेरा है। आप आगे जो माँग रहे हो, वह सब अँधेरा ही है। उसे बुलवाने वाला कोई है ही नहीं। ये 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' बोल रहे हैं और आप जो कह रहे हो न, वह सब तो घोर अँधेरा है। उस तरफ़ बहुत लोग गए और वे सभी भटक गए।

यदि अपने आप आ जाए तो बैठ गया लक्ष

समकिती जीव को क्या होता है? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान हो जाता है जबकि अन्य लोगों का कोई ठिकाना नहीं रहता। उन्हें कभी थोड़ा-बहुत ध्यान में आ जाता है कि 'मैं आत्मा हूँ', लेकिन समकिती को तो अपने आप ही आ जाता है। स्मरण तो करना पड़ता है लेकिन यह अपने आप आ जाता है, इनमें तो बहुत अंतर है। स्मरण किया हुआ विस्मृत हो जाता है। जो विस्मृत हो जाता है, उसका स्मरण करना पड़ता है। अत: ये सब आगे बढ़ने के रास्ते हैं। अत: आपको रटन नहीं करना है। रटन करोगे न, तो वह मूलभूत जो सहज है, वह बंद हो जाएगा। सहज जो अंदर आ रहा था... सहज रूप से आएगा, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' *लक्ष* रहेगा ही।

प्रश्नकर्ता : हाँ, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसका हमेशा *लक्ष* रहता ही है, चौबीसों घंटे।

दादाश्री : वह अपने *लक्ष* में रहा ही करता है, *लक्ष* में रहता है।

प्रश्नकर्ता : तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा बोलना नहीं है?

दादाश्री : बोलना हो तो बोलो। नहीं बोलना हो तो उसकी कोई ज़रूरत नहीं है। वह निरंतर चौबीसों घंटे *लक्ष* में ही रहेगा। रोज़ रात को 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते-बोलते सो जाना।

खुद शुद्धात्मा बनकर बाकी सभी चीज़ों से कहकर कि 'हम अब ऑफिस बंद कर देते हैं। आप सुबह आना, साढ़े छः बजे। अब अभी ऑफिस बंद है।' जो भी विचार आ रहे हों उन सब से कह देना। 'आज पहला दिन है इसलिए रिक्वेस्ट करते हैं कि अब आप यहाँ पर मत आना। नहीं तो आपका अपमान हो जाएगा इसलिए फिर से मत आना।' तब फिर ये बंद हो जाएँगे। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ, शुद्धात्मा हूँ' इस तरह धीरे से अपने ही कान को सुनाई दे उस तरह बोलते हुए दादा के चित्रपट का निदिध्यासन करते-करते सो जाना है।

प्रश्नकर्ता : दादा ने तो कहा है न, ''रात को 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते हुए और निदिध्यासन करते हुए सो जाना तो पूरी रात नल चलता रहेगा'', तो वह कौन सी जागृति है?

दादाश्री : वह ध्यान कहलाता है। वह ध्यान में रहे तो भी अच्छा है।

दादाश्री : रात को आप सो गए हों और जागो, तब सबसे पहले अपने आप क्या *लक्ष* में आता है आपको?

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वही आता है।

दादाश्री : अपने आप 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा आए तो *लक्ष* बैठ गया है ऐसा समझना। उसे याद नहीं करना पड़ता। याद करें तो वह तो याददाश्त नहीं हो तो याद नहीं भी आए। *लक्ष,* वही जागृति है। और हम लोगों को तो अनुभव भी है। अनुभव, *लक्ष,* प्रतीति - ये तीनों ही हमें हैं। आत्मा का अनुभव हो जाए, उसके बाद ही समभाव से क्रिया होती है, प्रवर्तन होता है।

रोंग बिलीफ के सूक्ष्म तार तोड़ते हैं ज्ञानी

यदि आपसे ऐसा पूछा जाए कि वास्तव में आप चंदूभाई हो या शुद्धात्मा हो? तो आप क्या कहोगे?

प्रश्नकर्ता : यों तो शुद्धात्मा हैं लेकिन व्यवहार से चंदूभाई।

दादाश्री : हाँ, रियली आप शुद्धात्मा हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अवश्य।

दादाश्री : यदि आप वास्तव में शुद्धात्मा हो तो आपके *लक्ष* में क्या रहता है? आपके ध्यान में क्या रहता है? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा ध्यान में रहता है या नहीं रहता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वही ध्यान रहता है, ठीक है।

दादाश्री : आपको उसका जो ध्यान रहता है, वह शुक्लध्यान है। अब आपको शुक्लध्यान उत्पन्न हुआ है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' जिसे ऐसा ध्यान रहता है, भगवान ने उसे शुक्लध्यान कहा है। क्योंकि 'शुद्धात्मा हूँ', वह ध्यान चूकना नहीं चाहिए, भूलना नहीं चाहिए, वह *लक्ष* में ही रहना चाहिए कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'।

प्रश्नकर्ता : उसे भूलाना चाहें तब भी नहीं भूल पाते।

दादाश्री : नहीं भूल सकते। यह तो, ये संसार व्यवहार में भी 'मैं चंदूलाल हूँ' ऐसा सझते हैं न, तो कईं लोग खुद का वह भूलना

चाहते हैं, लेकिन क्या वे भूल सकते हैं? वह तो विधि वत ज्ञानी के माध्यम से उनके तार कट जाने चाहिए। सूक्ष्म तार, श्रद्धा के तार बंधे हुए हैं न। वे तार टूट जाने चाहिए। उल्टी श्रद्धा, रोंग बिलीफें टूट जाए और राइट बिलीफ बैठ जाए तो काम आएगा।

राइट बिलीफ को 'सम्यक् दर्शन' कहा गया है और उल्टी बिलीफ को 'मिथ्यात्व' कहा गया है। अत: देहाध्यास किसे कहते हैं? 'मैं चंदूलाल हूँ', 'यह मैंने किया,' 'यह मेरा है' यह सब देहाध्यास है। 'मैं इस धर्म के बारे में बहुत जानता हूँ', 'तमाम शास्त्रों का पूरा जानकार हूँ', 'शास्त्रों का ज्ञान मुझे मैखिक है।' 'श्रुतज्ञान मैखिक है' वह सारा देहाध्यास है। सभी शास्त्र मैखिक हों फिर भी उसे भगवान ने देहाध्यास कहा है। क्योंकि उसका यह अध्यास नहीं टूटा है कि 'मैं चंदूलाल हूँ'। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' हो जाए तो हो चुका तो उसका हल आ जाएगा।

एक बार समकित प्राप्त किया तो दृष्टि बदल जाती है। 'जगत् की विनाशी चीज़ों में सुख है' जो ऐसे भाव दिखाती है, वह मिथ्यादृष्टि है। दृष्टि 'इस ओर' घूम जाए तो आत्मा का ही स्वभाव दिखता रहेगा, वह स्वभाव-दृष्टि कहलाती है। स्वभाव-दृष्टि अविनाशी पद को ही दिखाती रहती है! दृष्टिफेर से यह जगत् विद्यमान है। 'ज्ञानी पुरुष' के अलावा अन्य कोई आपकी दृष्टि नहीं बदल सकता। 'ज्ञानी पुरुष' दिव्यचक्षु देते हैं, प्रज्ञा जागृत कर देते हैं तब दृष्टि बदल जाती है। अपना खुद का आत्मा तो दिखता है, लेकिन दूसरों के भी आत्मा दिखते हैं, 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' हो जाता है।

स्व-शुद्धि के लिए शुद्धात्मा देखना

प्रश्नकर्ता : मैं मेरे शुद्धात्मा में रहूँ, परंतु साथ-साथ सामने वाले के शुद्धात्मा के साथ संधान होना चाहिए न?

दादाश्री : सामने वाले के शुद्धात्मा देखने से यह फायदा है कि वह अपनी खुद की शुद्धि बढ़ाने के लिए है, न कि सामने वाले व्यक्ति को लाभ पहुँचाने के लिए! खुद की शुद्ध दशा बढ़ाने के लिए सामने वाले में शुद्धात्मा देखो, ताकि खुद की दशा बढ़ती जाए!

प्रश्नकर्ता : एक शुद्धात्मा का दूसरे शुद्धात्मा के साथ संधान होता है या नहीं?

दादाश्री : संधान कुछ भी नहीं है, यह स्वभाव है। यह 'लाइट', यह 'लाइट' और यह 'लाइट'-ये तीनों 'लाइटें' इकट्ठी करें फिर भी उनमें से हर एक लाइट का खुद का व्यक्तित्व तो अलग रहेगा। उसमें एक-दूसरे को कोई कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचाता।

प्रश्नकर्ता : तो फिर सामने वाले के लिए हमें जो गलत भाव हैं, खराब भाव हैं, वे प्रतिक्रमण करने से कम हो जाएँगे क्या?

दादाश्री : अपने खराब भाव खत्म जाते हैं, अपने खुद के लिए ही है, यह सब। सामने वाले को अपने से कोई लेना-देना नहीं है।

यदि भैंस को, गधे को, सभी को शुद्ध ही देखोगे तो आपको शुद्धता का लाभ मिलेगा। यदि भैंस देखोगे तो भी चलेगा और यदि शुद्धात्मा देखोगे तो भी चलेगा। अभी आप यदि किसी व्यक्ति के शुद्धात्मा देखोगे तब भी वह चल जाएगा और 'नालायक है, बदमाश है,' ऐसा कहोगे तब भी चल जाएगा। आपकी दृष्टि चाहे कैसी भी हो, सामने वाले को तो उसकी पड़ी ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन अपने आत्मा के जो

भाव हैं, वे सामने वाले के आत्मा के भाव पर असर नहीं डालते?

दादाश्री : कुछ असर नहीं डालते। सामने वाले को हमसे कोई लेना-देना ही नहीं है। जो लेना-देना है, वह तो सिर्फ आप जो प्रतिक्रमण करते हो, उससे। प्रतिक्रमण भी समझ में आना चाहिए। क्योंकि आत्मा वीतरागी स्वभाव का होने की वजह से वह प्रतिक्रमण पहुँच जाता है। यह हमने खुद अनुभव करके फिर दिया है। आपको भी थोड़े बहुत अनुभव तो हुए होंगे?

हम शुद्धात्मा हैं और वह भी शुद्धात्मा है। हमें कपड़ों से क्या लेना-देना? कपड़े तो रेशमी भी हो सकते हैं और खराब भी। ये सब शरीर तो कपड़े हैं!

आपकी चाबी मेरे पास है

'ज्ञान' मिलने से पहले आप चंदूभाई थे और अब ज्ञान लेने के बाद शुद्धात्मा बन गए, तो अनुभव में कुछ फर्क लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यह भान आपको कितने समय तक रहता है?

प्रश्नकर्ता : एकांत में अकेले बैठे होते हैं, तब।

दादाश्री : हाँ। फिर कौन सा भाव रहता है? आपको कभी ऐसा भाव होता है कि 'मैं चंदूभाई हूँ?' आपको रियली 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा भाव कभी हुआ था क्या?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद नहीं हुआ।

दादाश्री : तो फिर आप शुद्धात्मा ही हो। इंसान को एक ही भाव रह सकता है। यानी कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा आपको निरंतर रहता ही है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई बार व्यवहार में शुद्धात्मा का भान नहीं रहता।

दादाश्री : तो क्या ऐसा ध्यान रहता है कि 'मैं चंदूभाई हूँ'? तीन घंटे शुद्धात्मा का ध्यान नहीं रहा और तीन घंटे के बाद पूछें, 'आप चंदूभाई हो या शुद्धात्मा हो? तब क्या कहोगे?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : तो फिर वह ध्यान था ही। कोई सेठ हो, और उसने शराब पी रखी हो तो उस समय उसका सारा ध्यान चला जाता है, लेकिन शराब का नशा उतर जाए तब...?

प्रश्नकर्ता : फिर जागृत हो जाएँगे।

दादाश्री : उसी प्रकार यह भी दूसरा, बाहर का असर है।

मैं पूछूँ कि वास्तव में 'चंदूभाई' हो या 'शुद्धात्मा' हो? तब आप कहते हो, कि 'शुद्धात्मा'। दूसरे दिन आपसे पूछता हूँ कि 'आप वास्तव में कौन हो?' तब आप कहते हो कि 'शुद्धात्मा'। पाँच दिनों तक मैं पूछता रहूँ, इसके बाद मैं समझ जाता हूँ न कि आपकी चाबी मेरे पास है। उसके बाद अगर आप शिकायत करोगे तो भी मैं सुनूँगा नहीं। भले ही आप शिकायत करते रहो।

शुद्धात्मा साधार इसलिए शुद्ध व्यापार

अभी तक चेतन का आधार '*पुद्गल*' था, अब चेतन का आधार 'शुद्धात्मा' हो गया। इसलिए खुद अपना ही आधार बन गया, अब *पुद्गल* के आधार पर नहीं है। पूरी दुनिया *पुद्गल* के आधार पर है।

बर्तन में घी भरा हो और उस पंडित को विचार आए कि पात्र के आधार पर घी है या घी के आधार पर पात्र है। ऐसा विचार पंडित को आता है, दूसरे अबुध लोगों को नहीं आता। पंडित का दिमाग़ तेज़ होता है न! उस पंडित ने पता लगाने के लिए बर्तन को उल्टा किया, तब उसे समझ में आया कि अरे, यह तो बर्तन के आधार पर घी था। उसी प्रकार इन लोगों में *पुद्गल* के आधार पर आत्मा रहा हुआ है। खुद, खुद पर आधारित हो, 'मैं' *पुद्गल* के आधार पर नहीं, ऐसा समझ में आ जाए तब शुद्धात्मा 'साधार' होता है! *पुद्गल* के आधारी को भगवान ने निराधार कहा है, अनाथ कहा है और आत्मा के आधारी को सनाथ कहा है। साधार हो जाने के बाद कुछ भी बाकी ही नहीं रहा न!

पंचम् दीवो 'शुद्धात्मा' साधार,
शुद्ध खातावही, निर्भेद वेपार(दीवो)

लक्ष में ही रहता है, शुद्धात्मा रूपी हीरा

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई और आत्मा अलग हैं, ऐसा सहज रूप से पता चलना चाहिए या हमें प्रयत्न करना चाहिए, प्रैक्टिकली?

दादाश्री : नहीं, वह तो जागृति ही कर देगी। वैसी जागृति रहती ही है। जैसे कि यदि हमने एक डिब्बी में हीरा रखा हो, तो जिस दिन डिब्बी खोली थी, उस दिन हीरा देखा था। उसके बाद डिब्बी बंद करके रखी हुई हो, फिर भी हमें उसके भीतर हीरा दिखाई देता है। नहीं दिखाई देता?

प्रश्नकर्ता : दिखाई देता है।

दादाश्री : यह जो 'दिखाई देता है' उसका क्या अर्थ है? उसके बाद आपको हमेशा ध्यान रहता है न, कि इस डिब्बी में हीरा है। फिर क्या ऐसा कहते हो कि यह डिब्बी ही है या फिर इस डिब्बी में हीरा है, ऐसा कहते हो?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ऐसा होता है कि रास्ते में जाते समय शुद्धात्मा देखते हुए जाते हैं लेकिन जैसे एक चीज़ देखी कि इस डिब्बी में हीरा ही है, तो जिस तरह से वह दिखाई देता है, उतना स्पष्ट इसमें नहीं दिखाई देता।

दादाश्री : स्पष्ट देखने की ज़रूरत भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह तो फिर मिकेनिकल लगता है।

दादाश्री : नहीं-नहीं! वह तो आपको ऐसा लगता है कि देखा हुआ है। अपने *लक्ष* में रहता ही है कि हीरा ही है।

प्रश्नकर्ता : सुबह जब बाहर घूमने जाते हैं, तब 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' यों बोलते हैं और फिर जब आसपास पेड़-पौधे वगैरह देखते हैं तब ऐसा बोल देते हैं कि 'शुद्धात्मा को नमस्कार करता हूँ', तो इन दोनों में से कौन सा ज़्यादा अच्छा है?

दादाश्री : वह जो भी बोलते करते हो, वह सब ठीक है। जब धीरे-धीरे यह बोलना भी बंद हो जाएगा तो तब इससे भी अच्छा रहेगा। बोलना बंद हो जाएगा और अपने आप ही रहा करेगा।

प्रश्नकर्ता : तो इन दोनों में से कौन सा अच्छा है?

दादाश्री : दोनों ही। बोलने की ज़रूरत नहीं

है, फिर भी अगर बोलते हो तो अच्छा है। बाकी, धीरे-धीरे बोलना छूट जाए तो अच्छा है। बोले बगैर, ऐसे ही नमस्कार नहीं कर सकते? लेकिन अंदर ही अंदर बोलने में भी कोई हर्ज नहीं है। यदि मन में ऐसा लगे तब भी कोई हर्ज नहीं है।

रियल व रिलेटिव की डिमार्केशन लाइन

सिर्फ तीर्थंकरों ने ही रिलेटिव और रियल दोनों की लाइन ऑफ डिमार्केशन डाली है और किसी ने नहीं डाली। कुन्दकुन्दाचार्य ने डाली थी, वह भी सीमंधर स्वामी के कनेक्शन से। अपना रियल है इसलिए रिलेटिव और रियल दोनों के बीच में डिमार्केशन लाइन डाली है! तभी से फिर वह नित्य हो जाता है। डिमार्केशन लाइन बहुत अच्छी डल गई। उसी की कीमत है न!

लोग रिलेटिव को रियल मानते हैं। कईं बात में रियल को रिलेटिव मानते हैं। वह भ्रामकता निकल गई न? इसीलिए इस ज्ञान की वजह से अगले दिन जीवित हो जाता है। यही उसका कारण है न! वर्ना जीवित होता ही नहीं न!

अपना रिलेटिव और रियल का डिमार्केशन बहुत एक्युरेट आ गया है न! जबकि सारा संसार उसी में फँसा हुआ है। इस रिलेटिव और रियल के बीच जो लाइन ऑफ डिमार्केशन होनी चाहिए, उसका इन लोगों को पता ही नहीं है। अत: एक्यूरेट डिमार्केशन लाइन डलती ही नहीं है और फँस गए हैं। रिलेटिव व रियल के झगड़े बंद नहीं होते। इसलिए आत्मा प्राप्त नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : रिलेटिव को रिलेटिव के रूप में तभी जान सकते हैं न, जब रियल को जान लेंगे।

दादाश्री : जब रियल को जाने लेंगे तभी रिलेटिव को जानेंगे। अथवा तो रिलेटिव को पूर्ण रूप से जान लेंगे तभी रियल को जान सकते हैं। जैसे कि सिर्फ, गेहूँ को जान लें तो फिर बचा क्या? कंकड़। सिर्फ कंकड़ को जान जाएँगे तो क्या बचेगा? गेहूँ। गेहूँ व कंकड़ दोनों मिले हुए हैं। ऐसा पता चल जाता है न?

प्रश्नकर्ता : लोगों ने रिलेटिव को रिलेटिव भी नहीं जाना, ऐसा हुआ न दादा?

दादाश्री : कुछ जाना ही नहीं है न! यदि रिलेटिव को पूर्ण रूप से जान ले तो बहुत अच्छा। लोगों ने रिलेटिव का एक अंश भी नहीं जाना है। कुछ भी नहीं जाना। यह तो बल्कि नुकसान ही उठाया है। यदि रिलेटिव को जान जाएँगे तो फिर रियल को जान ही जाएँगे। वर्ना लाइन ऑफ डिमार्केशन ठीक से नहीं डलेगी न, कि इतना यह भाग रियल का और यह रिलेटिव का!

प्रश्नकर्ता : खुद से, अपने आप नहीं हो सकता?

दादाश्री : नहीं, खुद को भान ही नहीं है न! शास्त्रों में जो लिखा है, वह पता ही नहीं है। शास्त्र में पूरे शब्द नहीं आते।

प्रश्नकर्ता : तो अंत में जब ज्ञानी पुरुष मिलेंगे तभी काम होगा।

दादाश्री : वर्ना नहीं होगा। अभी तक किसी का हुआ ही नहीं है। क्योंकि चार वेद इटसेल्फ (खुद ही) कहते हैं, 'दिस इज़ नॉट देट, दिस इज़ नॉट देट।' यह आत्मा ऐसा नहीं है जो कि पुस्तकों में उतरा जा सके!

आज्ञा से शुद्धात्मा की जागृति

प्रश्नकर्ता : सतत इस स्वरूप की, शुद्धात्मा की जागृति रहे, उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ये जो आज्ञा दी हैं, वे जागृति देती हैं। इन आज्ञाओं में रहोगे न, तो भी बहुत हो गया। पाँच आज्ञा ही ज्ञान है, अन्य कोई ज्ञान नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इसे, 'कारण मोक्ष' हो गया, ऐसा कहेंगे?

दादाश्री : 'कारण मोक्ष' हो गया, लेकिन अपना ज्ञान कैसा है कि जब वह आज्ञापूर्वक रहेगा, तभी यह ज्ञान उसके काम का। यदि आज्ञा में नहीं रहा तो ज्ञान चला जाएगा। क्योंकि आज्ञा ही मुख्य है। यदि बाड़ नहीं लगाई हो तो सबकुछ चला जाता है। अत: यह ज्ञान लेने के बाद आप आज्ञा में आ जाओगे और तब मोक्ष भी मिल चुका होगा।

निश्चय-व्यवहार समाए हैं पाँचों में

प्रश्नकर्ता : कल सत्संग में ऐसा आया था कि पाँच आज्ञाओं में से तीन आज्ञाएँ व्यवहार की हैं और दो निश्चय की हैं, वह ज़रा समझना है। वह कैसे?

दादाश्री : शुद्धात्मा देखना और रिलेटिव में उसका खोखा देखना, वे दो निश्चय स्वरूप हैं। और बाकी की तीन सिर्फ व्यवहारिक हैं। वे तीन व्यवहार और ये दो निश्चय। अपना यह पूरा मार्ग व्यवहार व निश्चय सहित है। निश्चय से शुद्धात्मा है और व्यवहार दृष्टि से सिर्फ बकरी ही दिखाई देती है। इसलिए ये दोनों निश्चय में ही जाते हैं। और वे तीन व्यवहार की हैं। अत: व्यवहार व निश्चय दोनों का संतुलन रखती हैं। ये पाँच आज्ञाएँ ठेठ मोक्ष जाते तक काम करती रहेंगी और हैं सरल और सीधी, टेढ़ी नहीं, कठिन नहीं। कुछ छोड़ने या करने को नहीं कहा है।

अपने ये पाँच वाक्य अविरोधाभासी होने चाहिए और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह हमारे *लक्ष* में आ जाना चाहिए। यह बात निर्विवाद है।

गुप्त तत्त्व का आराधन करने से, मोक्ष

एक बार, ज्ञानी पुरुष के माध्यम से शुद्धात्मा प्राप्त होना चाहिए। अत: यह साइन्टिफिक है, यह तो वैज्ञानिक तरीका है। वर्ना दो घंटे में ऐसा हो गया, ऐसा कभी सुना है क्या? दो घंटे में आप शुद्धात्मा बन गए, ऐसा कभी सुना है? लेकिन यह वैज्ञानिक तरीका है और यह ज्ञान तीर्थंकरों का है! यह मूल रूप से मेरा नहीं है। यह जो तरीका है न, यह मेरा मौलिक तरीका है, अक्रम का तरीका!

यह विज्ञान है, यह तो त्रिकाल विज्ञान है! यह भूतकाल में था, वर्तमान में है और भविष्यकाल में भी बदलेगा नहीं। ऐसा विज्ञान है, यह तो! आपको नहीं लगता कि यह विज्ञान है, दादा का? यदि मेल बिठाना आए तो पचाता चलेगा। अविरोधाभासी, सैद्धांतिक प्रकार से ऐसा नहीं लगता?

शास्त्रकारों ने कहा है कि एक समय (के लिए) भी यदि आत्मा प्राप्त कर ले तो बहुत हो गया। एक समय (के लिए) भी 'आत्मा' बनकर बोले तो काम हो जाएगा। आपको ज्ञान देने के बाद आप दोबारा 'शुद्धात्मा' बोलते हो वह, आप आत्मा होकर 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा बोलते हो और वह अपने आप आता है। इसलिए आप आत्मा बन गए।

महावीर भगवान ने कहा है कि एक क्षण के लिए भी यदि आत्मा बनकर आत्मा बोला तो छूट जाएगा। आप तो कितने ही समय से ऐसा

बनकर बोलते हो। जबकि ये दूसरे लोग तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ', इस तरह से बनकर नहीं बोलते। आत्मा बनकर 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा यदि एक ही बार बोला तो बहुत हो गया! और यदि समझ गया कि यह मेरा है और यह बाकी का सब विनाशी है, मेरा नहीं है, तब भी काम हो जाएगा!

प्रश्नकर्ता : 'उस गुप्त तत्त्व को जो आराधना करता है, वह प्रत्यक्ष अमृत को पाकर अभय हो जाता है।' ऐसा कहा है न!

दादाश्री : हाँ, जो शुद्धात्मा की आराधना करता है, शुद्धात्मा बनकर, 'शुद्धात्मा हूँ', ऐसा बोलता है, वह प्रत्यक्ष अमृत को पाकर निर्भय हो जाता है। क्योंकि जब तक यहाँ पर शुद्धात्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता और 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा रहता है, तब तक भीतर निरंतर विष की बूंदे गिरती रहती हैं। अत: सारी वाणी विषमय, वर्तन भी विषमय, मन व विचार विषमय और जब हम ज्ञान देते हैं न, उसके बाद अंदर से तुरंत ही अमृत की बूंदे गिरने लगती हैं। उससे विचार, वाणी व वर्तन धीरे-धीरे अमृतमय बनते जाते हैं।

शुद्धात्मा देखने से वास्ताविक आनंद होता है

जिसे यह ज्ञान मिला है, उसे तो एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलती। मुझे एक मिनट भी फुरसत नहीं मिलती, एक सेकन्ड भी फुरसत नहीं है न! बस के लिए खड़े हों तो जब तक बस नहीं आए तब तक लोग इधर-उधर देखते रहते हैं। इधर देखते हैं, उधर देखते हैं, यों बगले झाँकते रहते हैं। आपको वहाँ खड़े रहकर इधर-उधर बगले झाँककर क्या करना है? आपके पास तो सारा ज्ञान है न! इसलिए जो भी खड़े हैं, उनमें शुद्धात्मा 'देखना'। आते-जाते हुए लोगों में शुद्धात्मा 'देखना'। बसें जा रही हों, उनमें जो लोग बैठे हों, उनमें शुद्धात्मा 'देखना'। ऐसे करते-करते अपनी बस आ जाएगी। यानी सभी में शुद्धात्मा देखोगे और आप अपने शुद्धात्मा का ध्यान करते रहोगे तो आपका टाइम व्यर्थ नहीं जाएगा। जबकि लोग तो बगले झाँकते रहते हैं। इधर देखते हैं, उधर देखते हैं और फिर अंदर ही अंदर बेचैन होते रहते हैं। बस नहीं आए तो बेचैनी होती है। लेकिन आप अपना उपयोग क्यों बिगाड़ो? यदि शुद्धात्मा देखते रहोगे तो कितना आनंद होगा! अब हथियार प्राप्त हुआ है तो उपयोग करना चाहिए न! वर्ना हथियार पर ज़ंग लग जाएगा!

'शुद्धात्मा के लक्ष से' परमात्मा पद की श्रेणी की शुरुआत हुई

जब से सभी आत्माओं में शुद्धात्मा दिखने लगा तब से खुद परमात्मा बना वर्ना यह मेरा साला, यह मेरा मामा, यह मेरा नौकर है, यह मेरा सेक्रेटरी है, ये मेरे सेठ हैं, यह सब भ्रांति है। ऐसा जिसे समझ में आ गया कि सभी में शुद्धात्मा है, उसे परमात्मा पद प्राप्त हो गया। लेकिन अभी उस श्रेणी की शुरुआत हुई है, परमात्मा पद की! वास्तव में सिढ़ियाँ चढ़ने की सही शुरुआत अब हुई है। मोक्ष के दरवाज़े में घुस गया न, अब ऐसा कहेंगे कि श्रेणी की शुरुआत की। यहाँ पर सभी धर्मों को एक होना है। इस मोक्ष के दरवाज़े में घुसते समय, श्रेणी की शुरुआत करते समय सभी को इकट्ठा होना पड़ता है। अब जहाँ से शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठा वहाँ से श्रेणी की शुरुआत की। उसके बाद स्टेप बाय स्टेप आगे अनुभव होता ही रहेगा! अत: जब से ऐसा समझ में आया, 'सर्वात्मा ही शुद्धात्मा है' तभी से हमारी परमात्मा पद की श्रेणी की शुरुआत हो गई।

– **जय सच्चिदानंद**

लोकडाउन के समय में पूज्यश्री द्वारा लाइव सत्संग

कोरोना वायरस महामारी के कारण सरकार ने लोकडाउन की घोषणा की तभी से पूज्यश्री दीपक भाई रोज़ रात को 9 से 10 के बीच सीमंधर सीटी में अपने निवासस्थान 'वात्सल्य' से लाइव वेबकास्ट द्वारा वीडियो कॉन्फरेन्सिंग द्वारा सत्संग कर रहे हैं। इसमें देश-विदेश के हज़ारों महात्मा नियमित रूप से सत्संग में भाग ले रहे हैं। शुरुआत के दिनों में आप्तवाणी-1 पर पारायाण तथा उससे संबंधित प्रश्नोत्तरी सत्संग भी हुआ था। उसके बाद अलग-अलग ग्रुप के लिए सत्संग रखे गए। जिसमें विदेशियों के जोन वाइज जैसे कि अमरीका-कनाडा, ब्राज़िल-साउथ अमरीका, युरोप-जर्मनी, यू.के., ऑस्ट्रेलिया-न्यूज़ीलैन्ड, आफ्रिका-दुबई वगैरह। इसके अलावा अविवाहित भाईयों-बहनों MBA ग्रुप, बच्चों और युवाओं के GNC ग्रुप, DMHT, हिन्दी भाषी, गुजराती भाषी, सीमंधर सीटी-ATPL वगैरह ग्रुप के लिए भी सत्संग आयोजित हुए हैं। इस दौरान प्रतिक्रमण व सीमंधर स्वामी पर विशेष प्रश्नोत्तरी सेशन हुआ थे। डिजिटल समर केम्प के भाग के रूप में GNC के युथ और किड्स और उनके माता-पिता के लिए भी पूज्यश्री के साथ विशेष प्रश्नोत्तरी सेशन का आयोजन हुआ था।

उसके अलावा मई-2005 की दादावाणी 'व्यवस्थित के ज्ञान से बर्ते निर्भयता अपार' और फरवरी 1997 की दादावाणी 'जागृति सहित शुद्ध उपयोग' का वांचन और उस पर सत्संग हुए। इस सत्संग के कारण वीडियो एप्प द्वारा प्रश्नों पूछने वाले सभी महात्माओं को ऐसा अनोखा अनुभव हुआ। जैसे पूज्यश्री उनके घर पर आकर बात कर रहे हैं। रोज़ मिलने वाले इस एक घंटें सत्संग के कारण महात्माओं को ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे उनमें नई शक्ति का संचार हुआ है। और विषम परिस्थिति का निर्भयता से सामना करने की समझ प्राप्त होती रहती है। पूज्यश्री ने कोराना वाइरस महामारी के सामने लोगों को समता और निर्भयता रहे और ज्ञान में रहकर फाइलों का निकाल करे। जगत् का कल्याण हो, उसके लिए बहुत अच्छी प्राथना करवाई थी। पूज्यश्री ने मेडिकल फील्ड के डॉक्टर्स, स्पोर्टिंग स्टाफ के साथ भी सत्संग करके उनके प्रश्नों को समाधान दिए थे।

दादा भगवान परिवार द्वारा कोरोना वायरस महामारी के समय में राहत और सेवा कार्य

कोरोना वायरस महामारी के कारण लोगडाउव के स्थिति में लोगों के व्यवसाय बंध हो जाने से कई लोग आर्थिक संकट में आ गए थे। ऐसे समय में 'दादा भगवान परिवार' द्वारा अडालज और आसपास के गाँवों और शहरों के ज़रूमंद लोगों को एक महिने की राशन कीट पहुँचाई गई थी। साथ ही जहाँ कही भी दादा भगवान के सेन्टर चल रहे हैं। उन जगहो पर भी ज़रूरमंद महात्माओं को राशन कीट पहुँचाए गए। गुजरात के 24 जिलों और अन्य राज्यों के सेन्टर पर भी मदद पहुँचाई गई। अड़ालज त्रिमंदिर संकुल, बड़ौदा मंदिर द्वारा हज़ारों की संख्या में फूड पेकेट बनाकर आसपास के इलाको के लोगों तक पहुँचाए जा रहे हैं। संस्था द्वारा मुख्यमंत्री राहत फंड और पी.एम. केयर्स फंड में भी दान दिया गया। क्वोरोन्टाइन सेन्टर की तरह उपयोग करने के लिए राजकोट, त्रिमंदिर संकुल सरकार को दिया गया है। सेवा कार्य के भाग के रूप में युवा भाईयों की टीम द्वारा सीमंधर सीटी और ATPL में रहने वाले सिनियर सिटिज़न महात्माओं को दवाईयाँ और उनकी ज़रूरत की चीज़ें टिफिन वगैरह घर-घर पहुँचाए जा रहे हैं। अंबा हेल्थ सेन्टर द्वारा टेलिमेडिसिन की मदद से महात्माओं को ज़रूरी दवाईयाँ भी घर बैठे ही पहुँचाई जा रही है।

हिन्दी शिविर - इन्टरनेट के द्वारा लाइव सत्संग

28 से 30 मई - सुबह 8 से 9 **तथा** रात 9 से 10 - **पूज्यश्री के द्वारा लाइव सत्संग**

31 मई - ओनलाईन हिन्दी शोर्ट ज्ञानविधि (सिर्फ ज्ञान लेनेवाले मुमुक्षु जुड़ पाएँगे।)

सूचना - 1) यह शिविर के सत्संग आप मोबाइल में AKonnect, Dadabhagwan एप, दादा भगवान फाउन्डेशन की YouTube चेनल एवं वेबसाइट www.dadabhagwan.tv के माध्यम से घर पर ही सुन सकते है। 2) हाल ही में हुई PMHT शिविर की तरह यह हिन्दी शिविर पूरे दिन की रहेगी। 3) जिसमें सुबह-शाम पूज्यश्री के सत्संग एवं सामायिक होंगे। 4) इसके अलावा दिन के दौरान स्पेशियल विडियो सत्संग ओनलाईन दिखाए जाएँगे। 5) इस शिविर की ज्यादा जानकारी AKonnect एप में Satsang Updates में दी जाएगी।

विशेष निवेदन

कोरोना वायरस महामारी की वर्तमान परिस्थिति में सरकारी निर्देशो का पालन कर के पूज्यश्री दीपकभाई की निश्रा में अड़ालज में हिन्दी शिविर और दूसरे सभी कार्यक्रम तथा आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रीओं के विविध सेन्टरो में आयोजित सभी कार्यक्रम विलंबित किए गए है। भविष्य में परिस्थिति सामान्य होने के बाद सरकार द्वारा धार्मिक कार्यक्रमो के लिए अनुमति देने के बाद कार्यक्रम आयोजित होगे।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर हर रोज़ रात 10 से 11 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ सुबह 7 से 8 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम से शुक्र सुबह 11-30 से 12 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हररोज़ पर दोपहर 2 से 2-30 रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 9 GMT
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30am GMT)
- **'MA TV'** पर हर रोज, शाम 5-30 से 6-30 GMT - (गुजराती में)

Australia
- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ➢ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE

USA-UK-Africa-Aus. ➢ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9328661188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

कोरोना वायरस महामारी की वजह से हुए लोकडाउन के समय में 'दादा भगवान परिवार' के
अलग-अलग सेन्टर की ओर से राहत कार्य

मई 2020
वर्ष-15 अंक-7
अखंड क्रमांक - 175

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

शुद्धता के बर्ते इसलिए 'शुद्धात्मा' कहा

शुद्धात्मा अर्थात् शुद्ध चेतन ही। शुद्ध इसलिए कहना है कि पहले मन में ऐसा लगता था कि 'मैं पापी हूँ, मैं ऐसा नालायक हूँ, मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ।' ऐसे तरह-तरह के खुद पर जो आरोप थे, वे सभी आरोप निकल गए। शुद्धात्मा के बजाय सिर्फ 'आत्मा' कहेंगे तो खुद की शुद्धता का भान भूल जाएगा, निर्लेपता का भान चला जाएगा। इसलिए 'शुद्धात्मा' कहा है। अब चंदूभाई से बहुत ख़राब काम हो गया, लोग निंदा करें, ऐसा काम हो गया, उस समय तुझे, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा लक्ष नहीं चूकना चाहिए। 'मैं अशुद्ध हूँ', ऐसा कभी भी मत मानना, ऐसा कहने के लिए 'शुद्धात्मा' कहना पड़ता है। हमने जो शुद्धात्मापद दिया है, वह शुद्धात्मापद फिर बदलता ही नहीं। इसलिए शुद्ध शब्द रखा है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.